Shri Guru Prapattih

श्रीगुरुप्रपत्तिः

Document Information

Text title : chandrashekharendrasarasvatI Guruprapatti with Hindi and English translation by the same author

File name : chandrashekharendrasarasvatIguruprapattiH.itx

Category : deities_misc, gurudev, prapatti

Location : doc_deities_misc

Proofread by : Vani V.

Translated by : Hindi and English by Prof. Vempatikutumbashastri

Description/comments : Published in Sarasvati Sushama, Year 62, Vol 1-4, June 2007-March 2008

Acknowledge-Permission: Prof. Vempatikutumbashastri, Sampurnananda Sanskrit Vishvavidyala, Varanasi

Latest update : December 28, 2022

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

December 28, 2022

sanskritdocuments.org

Shri Guru Prapattih

श्रीगुरुप्रपत्तिः

॥ श्रीः ॥

यत्पादपङ्कजरजःपरिपूतमेतत्
श्रीभारतं विजयते बहुशः कृतार्थम् ।
श्रीकाञ्चिपीठविलसद्यतिराजराजं
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ १ ॥

जिनकी पादधूलि से सर्वप्रकार से पवित्रीकृत श्रीसम्पन्न यह भारत देश अधिक मात्रा में अपनी कृतार्थता का अनुभव करता है, ऐसे यतियों में उत्तमोत्तम श्री चन्द्रशेखर गुरुवर्य ही मेरी शरण अर्थात् रक्षक हैं ॥ १॥

I take refuge in the preceptor Shri ChandrashekharendrasarasvatI, the greatest pontiff of ShrI KAnchI KAmakoTi PITham, because of the dust of whose lotus-feet this great land of India is made pious and is repeatedly blessed.

Note : The AchArya travelled on foot and made several circumambulations of our motherland on foot. (1)

श्रीमज्जगद्गुरुजयेन्द्रसरस्वतीति
तच्छिष्यभूतविजयेन्द्रसरस्वतीति ।
शिष्यप्रशिष्ययुगलेन सुसेव्यमानं
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ २ ॥

श्री जगद्गुरु जयेन्द्र सरस्वती जी तथा उनके शिष्य विजयेन्द्र सरस्वती जी के रूप में अपने शिष्य एवं प्रशिष्य के रूप में युगल शिष्यों से अच्छी तरह (मनसा, वाचा, कर्मणा) सेवित तथा श्री भगवती पराम्बा की कृपा से पावित श्री चन्द्रशेखर गुरुवर्य ही मेरे शरणस्थान हैं ॥ २॥

I take refuge in the preceptor Shri ChandrashekharendrasarasvatI, who is well served by his disciple ShrI Jayendrasarasvati and by his disciple's disciple Sri Vijayendrasarasvati. (2)

मूर्तिः कठोरतपसा तनुरप्यधृष्या

दृष्टिः प्रसन्नमधुरा करुणामयी च ।
स्फूर्तिः परात्मविषया प्रतिभाति यस्य
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ ३ ॥

जिनकी मूर्ति (शरीर) कठोर तप के कारण समुच्छ्रयण प्राप्त कर ब्रह्मप्राप्ति की योग्यता प्राप्त कर चुकी है । "मूर्च्छा मोहसमुच्छ्रायोः" धातु से मूर्ति शब्द बनता है, अत: यह अर्थ धात्वर्थ के अनुगत है । जिनका तनु, तप के कारण विद्यावंश का विस्तार करने में सर्वथा सक्षम होने से अनभिभवनीय है, जिनकी दृष्टि प्रसादयुक्त एवं करुणामयी है, जिनके अन्त:करण में जीव-ब्रह्मैक्य का स्फुरण हो रहा है, ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती जी हमारी शरण हैं, मैं प्रपत्तिपूर्वक उनकी शरण में जा रहा हूँ ॥ ३॥

I take refuge in the preceptor Shri ChandrashekharendrasarasvatI, whose form is lean because of strenuous austerities and who is yet indomitable, whose look is peaceful, sweet and full of compassion and whose contemplation is on the supreme Reality. (3)

शान्ताकृतिः शममयी च वचःप्रवृत्तिः
शान्तं मनोऽथ गमनं हसनं च शान्तम् ।
शान्ते कृपापरवशे नयने च यस्य
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ ४ ॥

जिनकी आकृति शान्त है, जिनकी वाणी की प्रवृत्ति शममय है, अर्थात् "शमो मन्निष्ठतावुद्धेः" इस श्रीमद्भागवत के श्रीकृष्णवचन के अनुसार जिनकी वाणी सर्वदा प्रभु का संकीर्तन, गुणालाप आदि करती रहती है, जिनका मन शान्त है, अर्थात् भगवद्विषयता को प्राप्त है, जिनका गमन उपशम को सूचित कर रहा है, जिनका हँसना शान्त है, शमयुक्त है, अर्थात् भगवान् की लीला का विलास जगत् जिनके लिए सर्वदा हास देता है, कभी भी उनके लिए प्रतिकूल होकर रुदन का कारण नहीं बनता; क्योंकि रागद्वेषशून्य होने के कारण उनके लिए इष्टानिष्ट सब कुछ भगवत्प्रसाद होने से हास का ही कारण है, जिनके नेत्र शान्त हैं, उपशम को प्राप्त हैं; क्योंकि आप्तकाम होने से किसी भी वस्तु को औत्सुक्य से नही देखते। उनके नेत्र कृपापरवश होने से भी शान्त हैं; क्योंकि करुणा का उद्रेक उपशमपूर्वक ही होता है । ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वतीरूप गुरु की शरण में मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ ४॥

I take refuge in the preceptor Shri ChandrashekharendrasarasvatI, whose appearance is peaceful, whose manner of speech is peaceful, whose mind is peaceful, whose gait and smile is peaceful, and whose eyes are peaceful and filled with compassion.(4)

कान्तैर्मृदूक्तिनिचयैर्मृदुदर्शनाद्यै-

भीमैः कठोरचरणैर्यमसंयमाद्यैः ।
यो राजतेऽभिगमनार्ह इवाप्रधृष्यः
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ ५ ॥

कान्त एवं मृदु वचनसमूह तथा मृदु दर्शन आदि के द्वारा तथा भीम-कठोर चरणों एवं यम-संयम के द्वारा जो अभिगमन के योग्य, सर्वथा गमन के योग्य होकर अनभिभवनीय हैं, ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वतीरूप गुरु की शरण में मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन कर रहा हूँ । कठोर चरण को कठोर आचरण भी कह सकते हैं; क्योंकि यम-संयम के साथ उसका उच्चारण हुआ है । अत: "भीमैः शङ्करप्रापकैः कठोराचरणैर्यमसंयमाद्यैः" इस रूप में अर्थ की विवक्षा की जाय तो भगवान् शङ्कर को प्राप्त करानेवाले कठोर अहिंसा-सत्य-अस्तेय-ब्रह्मचर्यापरिग्रहरूप यम एवं तप:स्वाध्याय-ईश्वरप्राणिधानरूप नियम आदि से जिनके पास लोग जाते हैं तथा जो तप से अनभिभवनीय हैं, अर्थात् जिन्होंने लोकोत्तर तप का अर्जन किया है, ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वतीरूप गुरु की शरण में मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ ५॥

I take refuge in the preceptor Shri ChandrashekharendrasarasvatI, who is accessible because of his sweet and gentle manner of speech and soft glances, and yet who seems invincible because of his strenous and awe-inspiring practice of yama and samyama.

Note : yama is a technical term of YogashAstra; ahimsa = non-violence, satyam= speaking truth, asteyam = non-stealing, brahmacharyam = celibacy, and aparigrahah = non-acceptance of offerings; these are called yamas in the YogashAstra; saMyama means self control. (5)

"मूर्तं तपः", प्रसरणात्मक एष धर्मः
"ज्ञानं हि गन्तृ", "चलनात्मकमस्ति तेजः" ।
इत्थं यमेव कलयन्ति जना अजस्रं
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ ६ ॥

जो तप के मूर्तरूप हैं, जो गतिशील धर्म की मूर्ति हैं, जो गमन करनेवाले ज्ञान हैं, जो चलनात्मक तेज हैं । इस प्रकार जिनके बारे में लोग निरन्तर आकलन किया करते हैं, उन श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वतीरूप गुरु की शरण में मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ ६॥

I take refuge in the preceptor Shri ChandrashekharendrasarasvatI, whom people feel to be tapas embodied, dharma that is living and moving, knowledge that walks and effulgence that moves. (6)

लोकाभिरक्षणपरामभयात्मिकां यो

मुद्रां च दण्डमुभयोः करयोर्विबिभ्रत् ।
शान्तः परात्मनि रतो विलसत्यजस्रं
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ ७ ॥

लोकों की सभी भीतियों से रक्षा करनेवाली अभयमुद्रा और दण्ड, यह दोनों जिसके हाथ में विशेषरूप से धारित हैं, जो शान्त हैं तथा परात्मा प्रभु में रत होकर निरन्तर विलसित हो रहे हैं, ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वतीरूप गुरु की शरण में मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ ७॥

I take refuge in the preceptor Shri ChandrashekharendrasarasvatI, who remains established forever in the supreme Reality, who is peaceful, who rises one hand in protection of all mankind, and holds the monk's staff in the other.

Note : The AchArya was consistently very particular in holding the staff as ordained in the shAstras. (7)

रुद्राक्षहारनिचयोऽस्ति गले पवित्रे
भस्मापि फालफलके तुलसी च शीर्षे ।
दार्वात्मकोदकघटश्च करे हि यस्य
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ ८ ॥

जिनके गले में रुद्राक्ष-मालाओं का समूह अनेक हारों के रूप में शोभा पा रहा है, जिनके उन्नत ललाट पर भस्म एवं शिर पर तुलसी सुशोभित हो रही है, काष्ठमय "घट" कमण्डलु के रूप में जिनके हाथ में है, ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वतीरूप गुरु की शरण में मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ ८॥

I take refuge in the preceptor Shri ChandrashekharendrasarasvatI, on whose neck are rows of sacred rudrAkSha necklaces, on whose forehead is the auspicious ash, on whose head is tulasI and in whose hand is a water-pot made of wood.

Note : The AchArya introduced wooden utensils for his personal use. Also, he is used to wear huge number of garlands of tulasi, bilva and lemons on his head in his own characteristic way. (8)

प्राप्ताभयो जनभयादिव संवृताङ्गः
कोष्ठे क्वचित्प्रकटितार्धशरीरकान्तिः ।
ध्याने रतो हिततमे सततं य आस्ते
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ ९ ॥

जो अभयपद को प्राप्त करने के बाद भी जनसम्पर्करूपा भीति (जनभय) के कारण अपने शरीर के अंगों को आवृत्त कर, किसी प्रकोष्ठ के एक कोने में आधे शरीर को ही लोक को दर्शन देने के व्याज से प्रकट किये हुए, परब्रह्म के सर्वोत्तम ध्यानरूप समाधि में सतत लीन रहते हैं, ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वतीरूप गुरु की शरण में मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ ९॥

I take refuge in the preceptor Shri Chandrashekharendrasarasvati who remains always in meditation on the supreme Reality sitting in the corner of a room constraining his body and revealing only a part of it through some window or the other as though out of fear from people, though he has attained the state of fearlessness.

Note : During the AchArya's stay at shivAsthAnam his near invisible posture became wellknown to his devotees. (9)

अन्नादिकोशमिह यः प्रविलाप्य सूक्ष्मे
सर्वान्तरे स्थिरपदो दहरे सुसूक्ष्मे ।
अद्वैतमेकमवलम्ब्य लसन्तमीड्यं
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ १० ॥

जो अन्नमयादि कोशों को क्रमिक रूप से सर्वान्तर, विक्रियारहित दहराकाशस्वरूप परमात्मा में प्रविलापित कर केवल एक अद्वैत का अवलम्बन कर सुशोभित हो रहे हैं, ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वतीरूप गुरु की शरण में मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ । अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय एवं आनन्दमय पाँच कोश तैत्तिरीयोपनिषद् में वर्णित हैं, जो आत्मा का कोश की तरह आच्छादन किए हुए हैं । यह आच्छादन तादात्म्याध्यास के द्वारा देह, प्राण, मन, विज्ञान एवं आनन्द आदि में आत्मबुद्धि का होना है । इस अध्यास के निरास के पश्चात् आत्मा ब्रह्मरूप में प्रतिष्ठित होता है, इसी तथ्य का वर्णन प्रकृत श्लोक में संकेतरूप में किया गया है ॥ १०॥

I take refuge in the preceptor Shri ChandrashekharendrasarasvatI the revered one, who having dissolved the gross bodies such as annamayakosha etc., into the subtle one and having fixed himself steadily in the most subtle ether called 'dahara' shines forth embracing the one reality without a second.

Note : In the Taittiriyopanisad five sheaths namely, annamaya, prANamaya, manomaya, vijnAnamaya and Anandamaya are described in detail. It is also described that every succeeding sheath is internal and subtle with regard to the previous sheath. Dahara is the cavity in the heart. Meditation of it as Brahman is enjoined in the Upanisads. (10)

एकं द्वितीयरहितं परमार्थसत्यं

स्थूलादिसर्वजगतः प्रविलापसिद्धम् ।
दृष्ट्वा हि यः स्मितमुखोऽस्त्यतिलोकदृष्टिः
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ ११ ॥

एक, द्वितीयरहित परमार्थसत्य (जो सर्वदा सत्य है) स्वरूप ब्रह्म, जो स्थूल आदि सम्पूर्ण जगत् के प्रविलापन से सिद्ध होता है, उसका ज्ञान प्राप्त कर जो सर्वदा स्मितहास (थोडा हास) युक्त तथा अलौकिक दृष्टिवाले हैं, ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वतीरूप गुरु की शरण में मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ । कारणलय के क्रम से अर्थात् पृथ्वी का जल में, जल का तेज में, तेज का वायु में, वायु का आकाश में, आकाश का अव्यक्त में और अव्यक्त का आत्मा में लय के क्रम से पञ्चभूतों का लय होता है । इसी को स्थूलादि जगत् का प्रविलापन कहा गया है । योगशास्त्र में यह लय का क्रम वर्णित है ॥ ११॥

I take refuge in the preceptor Shri Chandrashekharendrasarasvati, whose uncommon looks and smile reveal his inward experience of the ultimate reality that is one without a second, that is transcendentally real and attained dissolving the gross world into
it. (11)

यस्यैव वामनशरीरधृतो गुणाब्धे-
स्त्रैविक्रमो हि महिमा विशदीकरोति ।
ब्राह्मस्य दीप्ततपसो महिमातिरेकं
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ १२ ॥

ब्रह्मज्ञानसम्पन्न यति सर्वरूप होते हैं । अत: आचार्यचरण के लघुकाय को विष्णु का वामनरूप बतलाया गया है, जिसमें स्थित गुणों का विस्तार हमें त्रिविक्रम (तीन पादविक्षेपों से तीनों लोकों को मापनेवाले विष्णु) की छवि में मिलता है । अत एव यह वर्णित किया गया है कि गुणों के सागर जिन स्वामिपाद के वामन (लघुकाय) शरीर में अवस्थित महिमा का विस्तार त्रिविक्रमस्वरूप करता है, अर्थात् आचार्यचरण में जितने गुण हैं, जो सामर्थ्य उनके अन्तःकरण में अवस्थित है, उसकी स्फुट व्यक्ति के लिए त्रिविक्रम का शरीर ही पर्याप्त हो सकता है, अन्य शरीर नहीं । ऐसे ब्राह्म तप के महिमापुंज के रूप में वर्तमान श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वतीरूप गुरु की शरण में मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ १२॥

I take refuge in the preceptor Shri ChandrashekharendrasarasvatI, the ocean of good and auspicious qualities, who possesses a small and short figure, but whose greatness which fills all the three regions, establishes the glory of severe penance made on Brahman.

Note : The terms 'vAmana' and 'trivikrama' signify two forms of one and the same Vishnu in his fifth incarnation. The first one is short and the second one is so vast that it filled all the three worlds. These terms are used to describe the physical form and the glory of the AchArya respectively. (12)

ओङ्कारतत्त्वमनिशं हृदि भावयन् यः
प्राणान्निरुध्य हृदि सुस्थिरकायदृष्टिः ।
निर्वातदीप इव भाति सुदीप्तमूर्तिः
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ १३ ॥

जो ओङ्कारस्वरूप तत्त्व की अपने हृदय में निरन्तर भावना करते रहते हैं और प्राण का हृदय में निरोध करके अपने काय (शरीर) एवं दृष्टि दोनों को स्थिर कर देने के कारण वायुरहित स्थान में अवस्थित दीप की तरह शोभित होते हैं, ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वतीरूप गुरु की शरण में मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ १३॥

I take refuge in the preceptor Shri ChandrashekharendrasarasvatI, who shines steadily poised like the flame of a lamp that is undisturbed in the absence of wind, and whose form is thus effulgent on account of his stopping the breath through prANAyAma and attaining steadiness in body and looks, and who remains in contemplation upon the supreme reality which is revealed in the letter 'OM' in his mind. (13)

निर्व्याधिदेहविभवं शतपूर्णमायुः
सञ्जीव्य दर्शयति यो गुरुयोगसिद्धिम् ।
नानश्नतोऽस्ति न च केवलमश्नतश्च
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ १४ ॥

व्याधिरहित वैभवयुक्त शरीर को शत संवत्सरों की पूर्ण आयु पर्यन्त जिन्होंने सम्यग् रूप से धारण कर अरोग जीवन से योग की गुरु-सिद्धियों को प्रदर्शित किया, जो संसार के भोगों में अत्यधिक आसक्ति न करके केवल शरीर-धारण के निमित्त उनको स्वीकार करते हुए योग की सिद्धियों को प्राप्त कर सके, ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वतीरूप गुरु की शरण में मैं अन्य साधनों का त्याग करके प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ १४॥

I take refuge in the preceptor Shri ChandrashekharendrasarasvatI, who having lived a full life of hundred years demonstrates the greatness of yoga which is attained only by one who is neither indulgent in wordly objects nor shies away from them, putting them to the uses of necessity. (14)

शान्तानि सत्त्वगुणवैभवमण्डितानि
तेजोमयानि करुणारसपूरितानि ।
योऽलौकिकानि वहतीह सुवीक्षितानि
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ १५ ॥

जो सत्त्वगुण के वैभव (प्रकर्ष) से मण्डित, करुणारसपूर्ण तेजोमय, अलौकिक दृष्टि-निक्षेप का वहन करते हैं, ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में मैं अन्य साधनों का त्याग करके प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ १५॥

I take refuge in the preceptor Shri ChandrashekharendrasarasvatI, whose looks are transworldly, peaceful, fully adorned with sattvaguna, radiant and overflowing with compassion. (15)

संविन्मये महसि निर्गुणनित्यसत्येऽ-
द्वैते सदाकृतपदः श्रुतिगोचरे यः ।
अव्यक्तहासपरितुष्टदृगेव भाति
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ १६ ॥

श्रुति से प्रतिपादित त्रिकाल सत्य, निर्गुण तेजःस्वरूप, ज्ञानरूप, अद्वैत ब्रह्म में सर्वदा रमण करनेवाले, अव्यक्तहास से युक्त, सर्वदा सर्वथा सन्तोष-युक्त दृष्टि-निक्षेप करनेवाले, शोभायमान श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में मैं अन्य सभी साधनों का परित्याग करके प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ १६॥

I take refuge in the preceptor Shri ChandrashekharendrasarasvatI, who sports an inexplicable smile and whose eyes are effuigent because of the joy of having established himself in the reality which is of the nature of consciousness, which is the eternal truth without any attribute, which is one without a second and which is the content of the Upanisadic teachings. (16)

संन्यासधर्मनिचयस्य पुराणशास्त्र-
रामायणादिपरिदर्शितमौनिवृत्तेः ।
काले कलौ निरुपमाननिदर्शनं यः
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ १७ ॥

सम्पूर्ण संन्यास धर्मों तथा पुराणशास्त्र एवं रामायण आदि के द्वारा सर्वतोभावेन प्रदर्शित की गयी मुनियों की वृत्ति या आचार के, इस सभी सद्गुणों का ग्रास करनेवाले कलियुग में, जो मूर्तरूप में

अद्वितीय उदाहरण हैं, ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में मैं अन्य साधनों का तिरस्कार कर प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ १७॥

I take refuge in the preceptor Shri ChandrashekharendrasarasvatI, who stands as an exceptional and matchless example of the 'muni-hood' described in the purANas, shAstras and the RAmAyaNa and who exemplifies the code of conduct of a sannyAsin during the present times of kali. (17)

धर्मिष्ठतां सकलसत्पुरुषेषु तन्वन्
वेदोक्तधर्ममखिलागमतन्त्रभेदान् ।
सङ्ख्यापयन् विजयतेऽपरशङ्करो यः
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ १८ ॥

सभी सत्पुरुषों में धर्मनिष्ठा का विस्तार करने के कारण तथा वेदप्रतिपादित धर्म, सम्पूर्ण आगम एवं तन्त्र का सम्यग् रूप से प्रकाशन के कारण जो द्वितीय शङ्करभगवत्पाद के रूप में उत्कर्षसहित शोभा पा रहे हैं, ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में मैं अन्य साधनों को छोड़कर प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ १८॥

I take refuge in the preceptor Shri ChandrashekharendrasarasvatI, who is truly Shankara come again inspiring all good people to perform various rituals enjoined in the Vedas and explaining the dharma envisaged in the Vedas and making known the significance of the Agamas and the Tantras. (18)

अद्वैततत्त्वममलं भुवि संविवृण्वन्
सच्छिष्यजातमनघं निखिलासु दिक्षु ।
संस्थापयन् विजयतेऽपरशङ्करो यः
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ १९ ॥

जो मलरहित अद्वैत तत्त्व का भूमण्डल पर सम्यग् रूप से विवरण करने के कारण तथा सभी दिशाओं में शोभन शिष्यसमूह का सम्यग् रूप से स्थापन करने के कारण द्वितीय शङ्करभगवत्पाद के रूप में उत्कर्षसहित शोभा पा रहे हैं, ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में मैं अन्य साधनों का तिरस्कार कर प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ १९॥

I take refuge in the preceptor Shri ChandrashekharendrasarasvatI, who is truly Shankara come again explaining the faultless truth of Advaita and establishing a multitude of disciples in all directions of the world. (19)

भाषादिभेदबहुलं जनजीवनं यः

सानातनेन महता हितधर्मदान्ना ।
संयोजयन् विजयतेऽपरशङ्करार्यः
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ २० ॥

भाषा आदि के अधिक भेद को अपने भीतर रखनेवाले जनजीवन को सनातन धर्मरूप हितकारी बृहद् बन्धन के द्वारा संयुक्त करते हुए जो द्वितीय शङ्करभगवत्पाद के रूप में उत्कर्षसहित शोभा पा रहे हैं, ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में अन्य साधनों का तिरस्कार करके मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ २०॥

I take refuge in the preceptor Shri Chandrashekharendrasarasvatl, who is truly Shankara come again inculcating the sense of unity among people by propagating the auspicious sanAtana dharma and thus reminding the people of their commonness who otherwise stand divided by distinctions of language, caste and several other factors. (20)

भूमिं भ्रमन् प्रचुरयन् सकलाँश्च वेदान्
अद्वैतमेव कथयन् प्रथयन् स्वधर्मम् ।
सम्बोधयन् जनततिं परशङ्करो यः
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ २१ ॥

सम्पूर्ण भारत-भूमि के भ्रमण के द्वारा सम्पूर्ण वेदों को समृद्ध करते हुए अद्वैत तत्त्व के उपदेश के द्वारा अपने धर्म का विस्तार करते हुए जन-समूह का अधिकारिता के अनुसार उचित सम्बोधन (जागरण) करते हुए जो द्वितीय शङ्करभगवत्पाद की तरह आचरण कर रहे हैं, ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में अन्य साधनों का तिरस्कार कर मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ २१॥

I take refuge in the preceptor Shri Chandrashekharendrasarasvati, who is truly Shankara come again and who tours the nation, popularises Vedic studies, preaches Advaita, establishes svadharma and enlightens the common man. (21)

बाल्ये च दैवघटनात् शुभकामकोटि-
माठाधिपत्यगुरुतां गुरुणा नियुक्तः ।
स्वीकृत्य विश्वविदितं हि मठं चकार
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ २२ ॥

बाल्यावस्था में दैवयोग से काञ्चीकामकोटि-मठ का प्रबन्ध-भार एवं गुरुत्व के गुरुतर भार के उद्वहन के लिए गुरु की आज्ञा को स्वीकार कर जिन्होंने काञ्चीकामकोटि-मठ को विश्वविदित

बना दिया, ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में अन्य साधनों का तिरस्कार कर मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ २२॥

I take refuge in the preceptor Sri CandrashekharendrasarasvatI, who has been made to fulfill the arduous duty of heading the KAnchi KAmakoTi Matha at a very young age by his guru under unexpected and accidential circumstances, and who having accepted it has, indeed, made the Matha known to the entire world. (22)

सञ्चारपूतभुवनं भुवि दीप्तकीर्तिं
साक्षात्कृतागमवचः प्रतिपाद्यतत्त्वम् ।
सान्निध्यमात्रशमिताखिलकल्मषौघं
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ २३ ॥

भूमण्डल को अपने संचार (भ्रमण) से पवित्र करनेवाले, सम्पूर्ण भूमण्डल में अपनी कीर्ति को प्रकाशित करनेवाले, आगम-वचनों के प्रतिपाद्य तत्त्व का साक्षात्कार करनेवाले, अपने सान्निध्य मात्र से सम्पूर्ण पापसमूह का शमन करनेवाले श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में अन्य साधनों का तिरस्कार कर मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ २३॥

I take refuge in the preceptor Shri ChandrashekharendrasarasvatI, who has sanctified this world by his tours, who is endowed with glory and fame, who has directly experienced the reality which is described by the Upanishadic texts and who by his mere presence washes away all kinds of sins. (23)

कार्यं सदैव निगमागमपोषणादि
धार्यं सुबिल्वतुलसीदलमालिकादि ।
हार्यं च भक्तजनतादुरितं च यस्य
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ २४ ॥

सर्वदा निगम, आगम का पोषण ही जिनके लिए कार्य है; बिल्वपत्र, तुलसीदल एवं माला ही जिनके लिए धार्य (धारण करने के योग्य) है; भक्तजनसमूह का दुरित (पाप) ही जिनके लिए हार्य (हरण करने के योग्य) है, ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में अन्य साधनों का तिरस्कार कर मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ २४॥

I take refuge in the preceptor Shri ChandrashekharendrasarasvatI, for whom activity is always directed towards the furtherance of Vedic and shAstraic studies, for whom the garlands to be worn are of the holy leaves of bilva and tulasi and for whom the thing to be destroyed is the sin of his disciples. (24)

योऽनेकशो विहितपावनपादचार-
स्तीर्थानि नैजतपसा परिपावयन् हि ।
तीर्थाधिको विजयतेऽखिलतीर्थमूर्तिः
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ २५ ॥

जो अनेक बार अपने द्वारा कृत पावन पादसंचार से तथा अपने तप से तीर्थों को पूर्णरूप से पवित्र करने के कारण सभी तीर्थों से अधिक पवित्रकारक हैं तथा सम्पूर्ण तीर्थ-मूर्ति होकर अथवा बृहद् ब्रह्मरूप गुरुमूर्ति होकर उत्कृष्टरूप से शोभा पा रहे हैं, ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में अन्य साधनों का तिरस्कार कर मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ २५॥

I take refuge in the preceptor Shri ChandrashekharendrasarasvatI, who is indeed an embodiment of all the tirthas, who shines forth as a person more pious than all the tirthas and who makes the tirthas themselves more pious by bathing in them, during his several pilgrimages and circumambulations of the country by foot.

Note : tirtha means places of holy water.

Cf. भवद्विधाः भागवताः तीर्थभूताः महीतले तीर्थीकुर्वन्ति तीर्थानि स्वान्तस्थेन गदाभृता । (25)

पाण्डित्यमेदुरमतीन् स्वसभास्थलीषु
सम्बोधयन् विशदयन्निगमार्थतत्त्वम् ।
नैजं प्रकाशयति यो गुरुमूर्तिरूपं
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ २६ ॥

पाण्डित्य से ओतप्रोत मतिवाले विद्वद्गण को अपनी सभास्थली में सम्बोधित करते हुए निगम के प्रतिपाद्य तत्त्व को विस्तार से बोधित करके जो अपने गुरुमूर्ति रूप को स्पष्टरूप से प्रकाशित करते रहे हैं, ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में अन्य साधनों का तिरस्कार कर मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ २६॥

I take refuge in the preceptor Shri Chandrashekharendrasarasvati, who reveals his true form of DakShiNAmUrti, the form of Shiva as wisdom incarnate, by such acts as convening eminent scholars for discussion and addressing them and by elucidating the true significance of the meaning of the Vedas and the shAstras to them.

Note : It is in the good experience of Pandits that quite often they were unable to answer the questions posed by the AchArya during shAstraic conventions. At the end he used to clarify them himself. (26)

श्रीशाङ्करं शिवतमं मतमात्मभेद-

धिक्कारधीरममृतं निगमान्तसिद्धम् ।
अद्वैतमत्र गदितुं हि कृतावतारं
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ २७ ॥

अद्वैत ब्रह्म का प्रतिपादन करनेवाला श्रीशङ्करभगवत्पाद का अत्यन्त कल्याणकारी मत, जो आत्मभेद की धिक्कृति बुद्धि को धारण करता है, जो किसी भी मत से खण्डित न होने के कारण अमृतस्वरूप है तथा उपनिषद् से सिद्ध होता है, उसका उपदेश करने के लिए ही जिन्होंने अवतार लिया
है, ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में अन्य साधनों का तिरस्कार कर मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ २७॥

I take refuge in the preceptor Shri ChandrashekharendrasarasvatI, who has manifested himself in this world to teach us the Advaita (i) which was propounded by ShrI Shankara, (ii) which is the most auspicious of all philosophies, (iii) which alone is competent refuting the difference between the jIvAtman and the paramAtman, (iv) which is as sweet as nectar and (v) which is established by the Upanisads. (27)

कामाक्षिदिव्यचरणे सततं ह्युपास्ते
कामांश्च भक्तजनताभिमतान् ददाति ।
यः कामकोटिमठपोऽपि निरस्तकामः
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ २८ ॥

जो पराम्बा भगवती कामाक्षी के दिव्य चरणों की सतत उपसना करते हैं तथा भक्तजनसमूह की अभिमत कामनाओं की पूर्ति करते हैं, जो कामकोटि-मठ के मठाधिपति होकर भी कामनाओं का निरास कर चुके हैं, ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में अन्य साधनों का तिरस्कार कर मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ २८॥

I take refuge in the preceptor Shri Chandrashekharendrasarasvati, who always worships and meditates upon the divine feet of Kamaksi, who fulfills all the desires (kamas) of his devotees, who heads the KAma KoTi PItha and who yet remains without any desire. (28)

अद्वैतमेव वचने चरणे स्वचित्ते
सन्देशशंसनविधौ हितबोधने च ।
अद्वैतमूर्तिरिह यो विलसत्यजस्रं
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ २९ ॥

जिनकी वाणी से सर्वदा अद्वैत का प्रकाशन होता है, जिनका चित्त सर्वदा भगवान् के चरणों में, शिष्यों को दिव्य सन्देश देने में तथा उनके हितबोधन में रहता है, ऐसे अद्वैतमूर्ति के रूप में जो सर्वदा शोभा पा रहे हैं, ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में अन्य साधनों का तिरस्कार कर मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ २९॥

I take refuge in the preceptor Shri ChandrashekharendrasarasvatI, who possesses unique uniformity of thought, word and action, and who gives messages of good counsel prompted by his own convictions and practice in a unique way. Indeed, he exists forever as Advaita personified. (29)

यत्पादसेवनमलभ्यपदाप्तिहेतु-
र्यद्दर्शनं सकलदर्शनसिद्धिहेतुः ।
यद्भावनं शुभदमीप्सितलाभहेतुः
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ ३० ॥

जिनके चरणों का सेवन अलभ्यपद की प्राप्ति का हेतु है, जिनका दर्शन सकल सिद्धियों का हेतु है, जिनकी मूर्ति का निरन्तर ध्यान (भावना) शुभ को देनेवाला तथा ईप्सित लाभ का हेतु है, ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में अन्य साधनों का तिरस्कार कर मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ ३०॥

I take refuge in the preceptor Shri ChandrashekharendrasarasvatI, serving whose feet endows one with the most unattainable and coveted positions, seeing whom is to see all that is to be seen, contemplating upon whom gives one all auspiciousness and enables one to attain all that is desired. (30)

आचार्यशेखरममेयतपःप्रभाव-
मानन्दकन्दलितचारुगभीरवक्त्रम् ।
शिष्याभयैकवरदानरतं महान्तं
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ ३१ ॥

आचार्य श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती में अप्रमेय (अनुमान के अयोग्य) तप का प्रभाव लक्षित होता है, आनन्द की वृष्टि करनेवाला जिनका मुखमण्डल शोभायुक्त एवं गाम्भीर्ययुक्त है, जो शिष्यों को अभय का वरदान करने में सर्वदा उद्यत रहते हैं, जो सर्वप्रकार से महत्त्वयुक्त होने के कारण महान् हैं, ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में अन्य साधनों का तिरस्कार कर मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ ३१॥

I take refuge in the preceptor Shri ChandrashekharendrasarasvatI, who is the AchArya par excellence, who possesses the power of tapas in abundance, whose face is both majestic and beautiful with bliss permeating through every pore, who is indulgent in offering the boon of fearlessness to his disciples, and who is great in every way. (31)

आवृत्तचक्षुरिह यस्सकलं प्रपञ्चं
स्वप्नात्मकं परिमृशन् कुरुते च कार्यम् ।
साक्षीभवन् स्वकरणादिसुचेष्टितस्य
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ ३२ ॥

जो नेत्र-निमीलन कर सम्पूर्ण प्रपञ्च की स्वप्नसदृशता का विचार करते हुए अनासक्त भाव से कार्य करते रहते हैं तथा अपने करण एवं अकरण रूप इन्द्रियों से अनुष्ठित कार्य के साक्षीरूप में विद्यमान हैं, ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में अन्य साधनों का तिरस्कार कर मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ ३२॥

I take refuge in the preceptor Shri ChandrashekharendrasarasvatI, who having turned his eyes inward, experiences the entire world as a dream and who yet performs all his actions, distancing himself as the witness of his own good deeds performed by his physical and mental faculties. (32)

यो ह्यत्करूपनिजजीवितदर्शनेन
सम्पूजितोऽस्ति सकलैः स्वजनैः परैश्च ।
वाग्यामकश्शमदमादिगुणस्वरूपः
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ ३३ ॥

जिनकी एक रूप में जीवनचर्या को आजीवन देखकर सभी शिष्यगण, आत्मीय जन एवं अन्य लोग भी उनकी केवल श्रद्धा से नहीं, गुणप्रयोज्य पूजा करते हैं, जो वाणी का नियन्त्रण कर मौनव्रत धारण करनेवाले तथा शम-दमादि गुणों के मूर्तरूप ही हैं, ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में अन्य साधनों का तिरस्कार कर मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ ३३॥

I take refuge in me preceptor Shri ChandrashekharendrasarasvatI, who is manifest as the personification of qualities like sama and dama, who has been adored by all his disciples as well as by others, and who maintains silence; and who has thus silenced his critics, by exhibiting his uniform and consistent life-style.

Note : Control of the internal organ (mind) is called shama and control of the external organs such as eye etc. is called dama. (33)

यस्यैव जीवनमिहास्ति शताब्दसाक्षि
धर्मप्रचारपरिपालनबद्धदीक्षम् ।
आध्यात्मिकस्वपरिरक्षणदक्षदक्षं
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ ३४ ॥

जिनका जीवन सौ वर्ष का साक्षी है, जो धर्मप्रचार एवं धर्म के परिपालन हेतु गुरु से दीक्षा प्राप्त किये हुए हैं, जो आध्यात्मिक दृष्टि से स्वपरिरक्षण में दक्ष लोगों से भी अधिक दक्ष हैं, ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में अन्य साधनों का तिरस्कार कर मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ ३४॥

I take refuge in the preceptor Shri ChandrashekharendrasarasvatI, whose life is totally committed to the protection and propagation of sanAtana dharma, whose life most competently protects our spiritual wealth and whose life stands as witness to the full span of the twentieth century. (34)

संसारतापपरितप्तजनालिदुःखं
हर्तुं स्वयं परिजहार भवाख्यबन्धम् ।
कारुण्यपूरपरिशीतलसौम्यदृष्टिः
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ ३५ ॥

संसार-ताप से परितप्त जनसमूह के दुःख का हरण करने हेतु जिन्होंने संसार-बन्धन का स्वयं त्याग किया है, करुणा के प्रवाह से जिनकी दृष्टि सर्वतोभावेन शीतल तथा सौम्य है, ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में अन्य साधनों का तिरस्कार कर मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ ३५॥

I take refuge in the preceptor Shri ChandrashekharendrasarasvatI, who has cut asunder the knot of samsAra, for the sake of relieving the people who have been afflicted by the disease of samsAra and whose looks are warm and friendly with compassion overflowing them. (35)

आढ्ये धनेन रहिते विदुषां वरिष्ठेऽ-
विद्वज्जने युवजनेऽतिवयस्कदेहे ।
संस्कारमात्रमुपलक्ष्य करोति चित्तं
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ ३६ ॥

धनी व्यक्ति को या धनरहित दरिद्र को, श्रेष्ठ विद्वान् को या अविद्वान् पामर पुरुष को, युवक को या अत्यधिक वय वाले व्यक्ति को उपलक्षित कर उनकी चित्तवृत्ति केवल संस्कार के लिए

अघविधूनन हेतु होती थी । ऐसी समदृष्टि वाले करुणापरायण श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में अन्य साधनों का तिरस्कार कर मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ ३६॥

I take refuge in the preceptor Shri ChandrashekharendrasarasvatI, who cares equally for the wealthy and the poor, the scholar and the illiterate, the young and the old, whatever one may be, only if he is of good conduct. (36)

सर्वं च भक्तगदितं कटुदुःखजातं
शृण्वन् सदा परिमृशन् तदपायहेतुम् ।
मार्गं दिशन् यतिवरोऽपि महाकुटुम्बः
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ ३७ ॥

भक्तों के द्वारा व्यक्त किए गये कटु दुःखसमूह को सुनकर उस पर विचार करते हुए उसको दूर करने का उपाय बतलानेवाले यतिवर का कुटुम्ब बहुत विशाल था । इस विशाल कुटुम्ब पर अनुग्रह-दृष्टि रखनेवाले श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में अन्य साधनों का तिरस्कार कर मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ ३७॥

I take refuge in the preceptor Shri Chandrashekharendrasarasvati, who listens to the woes of his disciples, who contemplates on remedies to relieve them of their sorrows and who instructs the disciples accordingly and is indeed, therefore, the head of a large family though he remains a sannyAsin himself. (37)

देशं भ्रमन् धनचयं परिगृह्य यच्छन्
सन्तोषयन् जनततिं स्वपितेव पुत्रान् ।
यो राजते यतिवरो वसुधाकुटुम्बः
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ ३८ ॥

सम्पूर्ण राष्ट्र का भ्रमण करते हुए प्रभूत धन का संग्रह कर उसके वितरण के द्वारा जनसामान्य को अपने स्वयं की तरह पुत्रों को सन्तोष देने वाले, केवल राष्ट्र के भले के लिये अपने कुटुम्ब की तरह स्नेह एवं अपनत्व देने वाले श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में अन्य साधनों का तिरस्कार कर मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ ३८॥

I take refuge in the preceptor Shri Chandrashekharendrasarasvati, who being a mendicant, considers the world for his family, because of his constant travel and access to funds, collecting and then giving away for the welfare of all as father does his children. (38)

मुक्तोऽपि सन् भुवनसङ्ग्रहहेतुना यः
कर्माणि सर्वजनताहितदान्यसक्तः ।

कुर्वन्निदर्शयति नैजजगद्गुरुत्वं
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ ३९ ॥

जीवन्मुक्त होने पर भी जो लोकस्थिति के निमित्त कर्म के संग्रह के लिए सर्वजनसमूह का हित करनेवाले कर्मों का आचरण असक्त होकर भी स्वयं करते हुए अपने जगद्गुरुत्व को प्रदर्शित करते हैं, ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में अन्य साधनों का तिरस्कार कर मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ ३९॥

I take refuge in the preceptor Shri Chandrashekharendrasarasvati, who being liberated himself, performs, in a detached manner, actions that are good to all people, with a view to teach the world the truth about dispassionate action and who thereby justifies his status as jagadguru or the teacher of the world. (39)

पूर्णं वयस्तदुपदेशविधिश्च पूर्णः
पूर्णं तपस्तदुपदिष्टपरात्मबोधः ।
पूर्णं च कर्म य इहास्ति नितान्तपूर्णः
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ ४० ॥

जिन्हें सौ वर्ष की पूर्ण वय प्राप्त हुई है, जिनकी उपदेश-विधि भी पूर्ण है; क्योंकि उनके द्वारा उपदिष्ट मार्ग का अनुसरण कर लोग ऐहलौकिक एवं पारलौकिक फलों को प्राप्त कर आनन्दित होते हैं । उनका तप पूर्ण है तथा उनके द्वारा उपदिष्ट परात्मा का बोध भी पूर्ण है, जिनके कर्म पूर्ण हैं और इस प्रकार सर्वविध पूर्णता के कारण जो नितान्त पूर्णता को प्राप्त हैं, ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में अन्य साधनों का तिरस्कार कर मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ ४०॥

I take refuge in the preceptor Shri ChandrashekharendrasarasvatI, whose life of a hundred years is complete, whose counselling is complete, whose penance is complete, whose exposition of the supreme being (paramAtman) is complete, whose actions are complete and who is himself in every way complete. (40)

कर्मास्ति देहधृतिलोकशुभादिहेतु-
र्भक्तिर्भवे स्मरहरे सगुणे च यस्य ।
ज्ञानं निजानुभवसिद्धचिदेकनिष्ठं
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ ४१ ॥

जिनके कर्म देहधारण के निमित्त एवं उसके द्वारा लोक के शुभ के हेतु हैं, अर्थात् जिन्होंने केवल लोककल्याण के लिए शरीर धारण किया है, भोग के लिए नहीं । जिनकी भक्ति काम का दहन

करनेवाले सगुण शङ्कर में है, जिनका ज्ञान अनुभवसिद्ध चित्तत्त्वनिष्ठ है, अर्थात् जिन्होंने चित्तत्त्व का साक्षात्कारात्मक ज्ञान प्राप्त किया है, ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में अन्य साधनों का तिरस्कार कर मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ ४१॥

I take refuge in the preceptor Shri ChandrashekharendrasarasvatI, who performs only those actions that are necessary to sustain his body and which cause good to all humanity, who offers his devotion to the manifest form (SaguNa Brahma) in the form of Lord Siva and whose wisdom is centered round the pure consciousness which is revealed only in one's own experience. (41)

लोकस्य यो हितकरोऽस्ति सुकर्मयोगी
स्थाणौ कृतात्मशरणो ननु भक्तियोगी ।
साक्षात्कृतात्मविभवः खलु बोधयोगी
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ ४२ ॥

जो सम्पूर्ण लोक का हित करनेवाले शोभन कर्मयोगी हैं, जिन्होंने भगवान् शङ्कर में प्रपत्ति कर भक्तियोग का आश्रयण किया है, जो आत्मा के वैभव का साक्षात्कार करने के कारण ज्ञानयोगी हैं, ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में अन्य साधनों का तिरस्कार कर मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ । श्रीमद्भगवद्गीता में ज्ञानयोग, कर्मयोग और भक्तियोग के रूप में ईश्वर से योग या मिलन हेतु तीन उपाय बतलाये गये हैं । उन तीनों उपायों का समावेश आचार्यचरण में बताया गया है ॥ ४२॥

I take refuge in the preceptor Shri ChandrashekharendrasarasvatI, who is considered an exemplar of Karmayoga because of the actions he performs for the good of the society, who is considered an exemplar of bhaktiyoga because of his surrender to Lord Shiva and who is considered an exemplar of jnAnayoga because of his direct perception and experience of the atman.

Note : These three yogas which are considered to be mutually complimentary are well described in the texts like the BhagavadgitA. The AchArya is described as an exemplar of all the three yogas. (42)

ज्ञानादियोगनिरतौ वरसम्प्रदाय-
रक्षाविधौ शमदमादिगुणप्रकर्षे ।
स्वेनैव राजति समो य इहाद्वितीयः
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ ४३ ॥

जो ज्ञानयोग, भक्तियोग, कर्मयोग आदि के अनुष्ठान में तथा श्रेष्ठ सम्प्रदाय की रक्षा करने में अथवा शम, दम आदि गुणों के प्रकर्ष में अपने समान अपने ही होकर शोभा पाने के कारण अद्वितीय हैं, ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में अन्य साधनों का तिरस्कार कर मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ ४३॥

I take refuge in the preceptor Shri ChandrashekharendrasarasvatI, who is peerless and can be matched with himself alone in his mastery of the many kinds of yoga, in his protection of the varied and great traditions and in his possession of an abundance of virtues such as Sama and dama. (43)

आडम्बरं न सहते न च राजतन्त्रं
स्वीयप्रयोजनकृतं परिसेवनं च ।
अङ्गीकरोति करणत्रयसेवनं यः
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ ४४ ॥

जो अपने को प्रदर्शित करनेवाले समारम्भों को सहन नहीं करते तथा राजनीति को भी सहन नहीं कर पाते; क्योंकि उसमें उनकी रुचि नहीं है । स्वार्थप्रेरित सेवा-भाव जिन्हें पसन्द नहीं; क्योंकि उसमें वञ्चकता का भाव होता है । अत: जो केवल मन, वचन एवं शरीर इन तीन साधनों से समवेत रूप में की गयी सेवा को ही, जो एक-दूसरे की पूरक होती है, स्वीकार करते हैं, ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में अन्य साधनों का तिरस्कार कर मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ ४४॥

I take refuge in the preceptor Shri Chandrashekharendrasarasvati, who is intolerant of pomp and show, who is disinterested in politics, who does not accept service rendered to him with self-interest, who is pleased to accept only such services rendered to him by all the three instruments of services, namely, mind, speech and body. (44)

एकान्तवाससुखितो जनसङ्कुलेषु
देशेषु वासमपि यो बहुशश्चकार ।
दिग्भ्रान्तदुःखिजनतापथदर्शनाय
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ ४५ ॥

जो एकान्त-वास में सुख का अनुभव करते थे; किन्तु जनसंकुल स्थान में जहाँ जनसमुदाय रहता था, वहाँ भी उपदेश के अभाव में मार्ग को न प्राप्त करनेवाले किंकर्तव्यविमूढ दुःखी जनसमूह का पथप्रदर्शन करने के लिए बहुत बार जिन्होंने वास किया, ऐसे लोगों के उद्धार की रुचि रखनेवाले

श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में अन्य साधनों का तिरस्कार कर मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ ४५॥

I take refuge in the preceptor Shri ChandrashekharendrasarasvatI, whose preference is to enjoy solitude, but who stays in crowded cities also for long periods often, in order to guide mankind which is in distress because of its loss of direction in life. (45)

श्रीशङ्करार्यचरितं ह्यतिलोकवृत्त-
माश्चर्यकारि मनुजैर्विदितं कथेति ।
सत्यापितं भवति यस्य च दर्शनेन
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ ४६ ॥

श्री शङ्करभगवत्पाद का चरित्र जो अलौकिक एवं आश्चर्यकारक होने के कारण लोगों के द्वारा "कथा" के रूप में जाना जाता था, अर्थात् वर्तमान काल में जिसका अनुवर्तन सम्भव नहीं लगता, वह लोकोत्तर चरित भी जिनको देखने से सत्यापित हो जाता है, अर्थात् प्रत्यक्ष रूप में जिसे देखने के बाद लोग शङ्करचरित को सत्य मान लेते हैं, ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में अन्य साधनों का तिरस्कार कर मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ ४६॥

I take refuge in the preceptor Shri Chandrashekharendrasarasvati, perceiving whom one is convinced of the truth of ShrI Shankara's life which is otherwise so wondorous and superhuman that it might be considered a myth by people. (46)

यो बालको निजसुवर्णमयीं विभूषां
दत्त्वा नु चोरमथ तत्पतिमेव चक्रे ।
स्वान्ते सदा कलयते च हरस्य तत्त्वं
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ ४७ ॥

जिन्होंने बाल्यावस्था में अपना स्वर्णाभूषण चोर को स्वयं देकर उसे उसका स्वामी बना दिया; क्योंकि उस चोर में वे हरण करनेवाले हरपद-वाच्य शिव की प्रतिमूर्ति का विभावन अपने मन में सर्वदा करते रहे । ऐसे अलौकिक भावपूर्ण हृदयवाले श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में अन्य साधनों का तिरस्कार कर मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ । विशेष-आभूषण स्वयं ले लेने पर चोर उसका स्वामी नहीं हो सकता; क्योंकि जिसका धन है उसकी अनुमति स्वामित्व के लिए अपेक्षित है । अपनी स्वेच्छा से देकर स्वामी जी ने उसे चौर्य-दोष से बचाया; क्योंकि वह उनकी दृष्टि में भगवान् शिव की प्रतिमूर्ति था ॥ ४७॥

I take refuge in the preceptor Shri ChandrashekharendrasarasvatI, who in his boyhood gave away his gold bracelet to a thief, thus making the thief the owner of the jewel and who

always comtemplates upon the incident to understand the philosophical significance of the divine robber, Hara. (47)

वर्षे त्रयोदशतमे सुकुमारभावे
मूर्धाभिषेकमहितो वरकाञ्चिपीठे ।
स्वीकृत्य भारमतुलं विधिवद्दधार
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ ४८ ॥

तेरह वर्ष की सुकुमार अवस्था में जो काञ्ची पीठ पर मूर्धाऽभिषेक के द्वारा पूज्यता को प्राप्त किए तथा पीठ के अतुलनीय कार्यभार को स्वीकार कर जिन्होंने उसका विधिवत् निर्वाह किया, ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में अन्य साधनों का तिरस्कार कर मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ ४८॥

I take refuge in the preceptor Shri Chandrashekharendrasarasvati, who having taken the responsibility of being the head of the great KAnchi PItha having been consecrated at a tender age of thirteen, holds his office strictly according to the prescriptions. (48)

दुग्धाशया घटगलार्पितकण्ठदेशं
प्राणाशया परिलुठन्तमिवाखुभोजम् ।
सांसारिकं हि दयते हतबन्धनो यः
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ ४९ ॥

जो मुक्तात्मा आचार्यपाद सांसारिक लोगों को उस बिल्ली की तरह मानकर, जो दुग्धपूर्ण घड़े में अपनी गर्दन स्वयं फँसाकर उसे छुड़ाकर प्राण बचाने की आशा से चारों ओर व्याकुल होकर भागते हुए भी मुख में गृहीत चूहे को खाना चाहती है, केवल स्वार्थचिन्तनपरायण जानते हुए भी, उनके ऊपर उद्धार की इच्छा से दया करते हैं, ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में अन्य साधनों का तिरस्कार कर मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ ४९॥

I take refuge in the preceptor Shri ChandrashekharendrasarasvatI, who having cut the knot of samsAra feels compassion for people who, like the cat that has put its head into the milkpot greedily, and then rolls on the floor and struggles for life, have entangled themselves in samsAra and are struggling to be free. (49)

सिंहासनं सुरुचिरामलवस्त्रकोटिं
ग्रैवेयकादिनिकरं च किरीटकं यः ।
पीठाधिपोचितमपीह तृणाय मेने
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ ५० ॥

आचार्य-पीठ के सिंहासन, अत्यन्त सुन्दर एवं शुचि प्रकृष्ट वस्त्रों तथा धारणीय अलङ्कारसमूह एवं किरीट आदि, जो पीठाधीश्वर के लिए परम्परानुसार विहित होने से उचित हैं; उन्हें भी तृण के समान हेयता बुद्धि से अगणनीय समझनेवाले श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में अन्य साधनों का तिरस्कार कर मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ ५०॥

I take refuge in the preceptor Shri ChandrashekharendrasarasvatI, who was indifferent to the throne, the colourful garments, the many types of necklaces and the crown, even though the heads of the mathas are permitted to put them to use. (50)

तुर्याश्रमोऽपि महितं निजदेशदास्य-
मुक्तिप्रदं जनहितं खलु "खादि" वस्त्रम् ।
धृत्वा महोद्यमकृते विदधे य आशीः
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ ५१ ॥

चतुर्थाश्रमरूप संन्यास आश्रम में भी, अपने देश को दासता से मुक्ति दिलाने में समर्थ महत्त्वयुक्त खादी वस्त्र को जिन्होंने धारण किया तथा राष्ट्र के दासता से मुक्तिरूप अत्यन्त पवित्र एवं महान् उद्देश्य की पूर्ति के लिए अपना आशीर्वाद प्रदान किया, ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में अन्य साधनों का तिरस्कार कर मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ ५१॥

I take refuge in the preceptor Shri ChandrashekharendrasarasvatI, who in spite of having entered the fourth Ashrama, the state of sannyAsa, extended his blessings to the struggle for the freedom of our country by wearing clothes of khAdi, the cloth that is held in high esteem, an effective tool for the liberation from slavery, and which is the best for the welfare of the society.

Note : The AchArya wore exclusively KhAdi clothes till he attained siddhi. (51)

वेदस्य रक्षणपरो विधिवद् विधिज्ञः
कृत्वा निधिं तदुचितं बहुशिष्यसङ्घान् ।
सम्प्रेर्य नष्टसदृशास्सुररक्षशाखाः
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ ५२ ॥

जो वेदों की रक्षा में सर्वदा तत्पर हैं तथा वेदरक्षा की विधि को अच्छी तरह से जानने के कारण जिन्होंने वेदरक्षा हेतु पर्याप्त समुचित निधि (कोश) की स्थापना कर, बहुत शिष्यों को प्रेरित कर संचित की गयी इस निधि के द्वारा लोगों को अध्ययन में प्रेरित कर नष्टप्राय बहुत-सी वेदशाखाओं की रक्षा अच्छी प्रकार से की, ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में अन्य साधनों का तिरस्कार कर मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ ५२॥

I take refuge in the preceptor Shri Chandrashekharendrasarasvati, who being intent in protecting the Vedas is most competent in doing so, has constituted a huge trust for this purpose, who has inspired many to undertake the adhyayana of shAkhAs that are on the verge of extinction and who has thereby succeeded in protecting several such SakhAs. (52)

यस्सर्वधर्मसमभावनयातिधर्मी
धर्मे स्वकेऽभिरतिमेव सदाभिचष्टे ।
धर्मान्तरग्रहणकर्मणि हेत्वभावात्
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ ५३ ॥

जो सभी धर्मों में समभाव (बराबरी का भाव, अर्थात् प्रत्येक की अपने में पूर्णता) की भावना करने के कारण अतिक्रमणशील धर्म को धारण करने वाले हैं, अर्थात् यह अतिक्रमणशील धर्म ऐसा है जो सभी धर्मों के पुण्य को अपने में समाहित कर लेता है । ऐसा ब्रह्मज्ञानरूप धर्म है जिसे गीता में-

यावानर्थ उद्वापे सर्वत: सम्प्लुतोदके ।
तावान् सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानतः ॥

इस वचन के द्वारा बतलाया गया है । ऐसे धर्म को धारण करने पर भी जिन्होंने सबको अपने धर्म का पालन करने का उपदेश ही सर्वदा दिया; क्योंकि धर्मान्तर ग्रहण में उनको कोई फल नहीं दिखाई देता था, सब कुछ तो अपने धर्म से ही मिलेगा, यह उनका भाव था । ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में अन्य साधनों का तिरस्कार कर मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ ५३ ॥

I take refuge in the preceptor Shri ChandrashekharendrasarasvatI, who having transcended all dharmas and who holds all religions in all equal vision, always propogates one's pursuance of one's own specific religion alone, for want of any good reason to convert from one religion to another. (53)

वर्णेष्ववान्तरविभागशतेषु सत्सु
वैवाहिकादिसमयं दिशति स्वके यः ।
सङ्घस्य सर्वगणवृद्धिमपेक्षमाणः
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ ५४ ॥

ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य-शूद्रादि वर्णों में एक-एक में अवान्तर शताधिक भेदों के रहने पर भी विवाहादि अपने समूह में किये जाँय, ऐसा निर्देश उपदेश के माध्यम से देते हुए जो सभी समूहों

एवं अवान्तर प्रभेदों की वृद्धि की अपेक्षा रखते हैं, ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में अन्य साधनों का तिरस्कार कर मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ ५४॥

I take refuge in the preceptor Shri ChandrashekharendrasarasvatI, who advocates alliances of marriages within one's own community in a society where several hundreds of communities exist, only with a view to protect each and every group within the larger whole of the society. (54)

वर्णाश्रमादिपरिरक्षणदीक्षितो यः
कारुण्यदृष्टिकरणे न विवेक्ति कञ्चित् ।
लोकस्य दृष्टिमनुसृत्य निजां च दृष्टिं
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ ५५ ॥

वर्णाश्रम आदि की सर्वथा रक्षा करने हेतु कृतसङ्कल्प होने पर भी, कृपापूर्वक करुणा की दृष्टि करते समय किसी को वे भेद से अलग नहीं करते, चाहे वर्णाश्रमावलम्बी हो या अन्य धर्मी, आर्त होने पर सब पर कृपा करते हैं । लोक की दृष्टि का अनुसरण कर वे व्यवहार-निर्वाह के लिए वर्णाश्रम आदि की रक्षा का उपदेश देते हैं; किन्तु उनकी अपनी दृष्टि से जगत् के मिथ्या होने से वे भेदरहित होकर सबको भयमुक्त करने हेतु करुणा करते हैं । ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में अन्य साधनों का तिरस्कार कर मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ ५५॥

I take refuge in the preceptor Shri Candrashekharendrasarasvati, who in spite of being committed to the protection of varNas and Ashramas, never shows any disparity in his compassion to any one and who thus reconciles his individual point of view and the social point of view in an amicable way.

Note : From the point of view of AchArya, who is liberated while living, varNas and Ashramas are irrelevant. But from the point of view of the world they are very much relevant to uphold shAstraic instructions and to maintain the equilibrium. The AchArya's point of view is pAramArthika whereas the point of view of the world is vyAvahArika. He has reconciled both these seemingly opposite views in his own unique way. (55)

देवालयेषु सततं सुम-धूप-दीप-
नैवेद्यनिर्मितिकृते च दिदेश दातुम् ।
शालीश्च रूप्यकचयं विभवानुसारं
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ ५६ ॥

मन्दिरों में पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य आदि पूजासम्भार की आवश्यकता की पूर्ति करने के लिए जिन्होंने लोगों को अपनी सामर्थ्य के अनुसार चावल और रूपया देने हेतु उपदेश दिया, ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में अन्य साधनों का तिरस्कार कर मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ ५६॥

I take refuge in the preceptor Shri Chandrashekharendrasarasvati, who has called for the donation of rice and money according to one's capacity for the offering of flowers, dhUpa and naivedya in the temples. (56)

काञ्चीपुरे महति यो विचरन् स्वकीय-
वासादिना प्रकटयन् स्थलगौरवादि ।
जीर्णान् हि देवनिलयान् सुपुपोष नित्यं
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ ५७ ॥

विशाल काञ्चीपुरी में विचरण करते हुए जो अपने निवास आदि के द्वारा विश्रामस्थल के गौरव, महत्त्व आदि को सूचित करते हैं तथा जीर्ण देवनिलयों का जीर्णोद्धार आदि के द्वारा नित्य पोषण करते हैं; ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में अन्य साधनों का तिरस्कार कर मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ ५७॥

I take refuge in the preceptor Shri ChandrashekharendrasarasvatI, who has helped the renovation of the dilapidated temples in KAnchIpuram by such methods as wandering in the city, and by himself staying in them for some time to highlight the greatness and auspiciousness of these temples.

Note : During the AchArya's memorable stay at SivasthAnam, it was in the experience of the visiting devotees to enquire about the place of his stay and to search for and locate it with great difficulty. (57)

सर्वार्थसिद्धिदमथो मनसि प्रसाद-
सन्धायकं श्रुतिलयादियुतं च विष्णोः ।
सङ्कीर्तनं कलिहरं दिशतीह सर्वान्
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ ५८ ॥

सभी प्रयोजनों को सिद्ध करनेवाले तथा मन में प्रसन्नता का सञ्चार करनेवाले, श्रुति-लय आदि से युक्त भगवान् विष्णु के कलियुग के दोषों को दूर करनेवाले, नामसंकीर्तन का उपदेश सभी को देनेवाले श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में अन्य साधनों का तिरस्कार कर मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ ५८॥

I take refuge in the preceptor Shri ChandrashekharendrasarasvatI, who advises all to perform the musical rendering of the names of Vishnu-VishnusankIrtana - which gives all things desired, which gives solace to the mind, which is suited to shruti and laya and which is the destroyer of "kali". (58)

सन्दर्शनागतजनैस्सह भाषमाणो
योऽज्ञातहेतुकतया प्रतिपद्य मौनम् ।
सर्वान् समागतजनान् चकितान् विधत्ते
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ ५९ ॥

दर्शनार्थ आये हुए लोगों के साथ वार्तालाप करते समय अज्ञात कारणों से अचानक मौन होकर जो सभी समागत लोगों को आश्चर्यचकित कर देते हैं, ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में अन्य साधनों का तिरस्कार कर मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ ५९॥

I take refuge in the preceptor Shri Chandrashekharendrasarasvati, whose sudden withdrawal into silence even in the middle of conversations with visitors, leaves people around him wonder- struck. (59)

कामाक्षिपूजनविधौ विरतिं गतायां
नामावलावथ तदर्चनतत्परं यम् ।
दृष्ट्वा पुरोहितजनः पुनरेव वक्ति
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ ६० ॥

भगवती कामाक्षी का नामावली से अर्चन करते समय, पुरोहितों द्वारा उच्चरित नामावली का उच्चारण समाप्त होने पर भी पुष्पादि के अर्पण के द्वारा अर्चन करते रहनेवाले, जिनको पुरोहित लोग पूजा-विराम हेतु सङ्केत करते हैं, ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में अन्य साधनों का तिरस्कार कर मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ ६०॥

I take refuge in the preceptor Shri ChandrashekharendrasarasvatI, who continues to perform arcanA (worship) even after completion of the nAmAvali during the ritualistic worship of KAmAkShi and thereby causes the priests to chant the nAmAvali again. (60)

हस्तद्वयेन हृदये निहितेन बिम्बं
व्यासस्य पूजनकृते प्रणयन् बभौ यः ।
अद्वैतगाङ्गजलनेतृभगीरथाभः
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ ६१ ॥

व्यास-पूजन के अवसर पर, अपने दोनों हाथों से व्यासदेव की प्रतिमा को अपने हृदय में समेट कर ले जाते समय जो अद्वैतरूपी गङ्गा का जल लानेवाले भगीरथ की तरह प्रतीत होते हैं, ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में अन्य साधनों का तिरस्कार कर मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ । विशेष- व्यास जी ने ब्रह्मसूत्र की रचना कर अद्वैत-गङ्गा का उद्भव किया; किन्तु धरती पर उसके प्रचार एवं सर्वत्र गमन का कार्य भगीरथ-सदृश आचार्य शङ्कर एवं उनके अनुयायियों ने किया । यही तथ्य यहाँ सङ्केतित है ॥ ६१॥

I take refuge in the preceptor Shri ChandrashekharendrasarasvatI, who is hailed as Bhagiratha bringing down to us the Advaita GangA, while holding the idol of VyAsa against his chest and taking it to the place of worship during VyAsa-pUjA. (61)

यः स्वामिनाथभगवान् प्रणवं स्वपित्रे
सर्वात्मकाय जगतां गुरवे दिदेश ।
तस्यैव रूपमपरं मनुते जनो यं
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ ६२ ॥

जिन्होंने स्वामीनाथ भगवान् के रूप में अवतीर्ण होकर अपने पिता एवं जगत् के गुरु भगवान् शिव को प्रणवोपासना का रहस्य बतलाया, ऐसे स्वामिनाथ का ही दूसरा रूप जिसको लोग मानते हैं, ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में अन्य साधनों का तिरस्कार कर मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ ६२॥

I take refuge in the preceptor Shri Chandrashekharendrasarasvati, whom people consider to be a manifestation of Lord SvaminAtha who initiated his father Lord Siva, the teacher of all the worlds, into the meaning of the mystic praNavopAsana.

Note: It may be noted that the name of the AchArya before he was initiated into the sannyAsa was SvAminAthan. (62)

पद्भ्यां चरन् भरतभूमिमनेकवारं
सम्पाद्य शिष्यधनमद्भुतसङ्ख्या यः ।
सम्भाव्यमेव सकलं जगतीति शास्ति
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ ६३ ॥

इस भारतवर्ष की भूमि में अनेक बार पैदल भ्रमण कर, अद्भुत संख्या में शिष्यों को दीक्षित कर असम्भव को सम्भव करनेवाले जो आचार्य-चरण जगतीतल पर सब कुछ सम्भव ही है, असम्भव कुछ नहीं है, ऐसा उपदेश देते हैं; उन श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में अन्य साधनों का तिरस्कार कर मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ ६३॥

I take refuge in the preceptor Shri Chandrashekharendrasarasvati, who has shown that nothing is impossible in this world by his walking across the length and breadth of this vast land on foot several times, and thus earning an abundant wealth of devotees all over the country. (63)

वेदोक्तधर्मचरणे प्रतिषिद्धहानौ
विद्यासु च श्रुतिशिरःप्रतिपादितासु ।
ब्रह्मापरोक्षकरणे सुनिदर्शनं यः
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ ६४ ॥

वेद-प्रतिपादित धर्म का आचरण करने में, वेद से निषिद्ध का त्याग करने में, उपनिषद् में प्रतिपादित विद्याओं (उपासनाओं) का भ्रमरहित निश्चयात्मक ज्ञान रखने में तथा ब्रह्म का अपरोक्ष साक्षात्कार करने में जो शोभन निदर्शन (दृष्टान्त) हैं, ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में अन्य साधनों का तिरस्कार कर मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ ६४॥

I take refuge in the preceptor Shri ChandrashekharendrasarasvatI, who is exemplary in conducting the rituals enjoined in the Vedas, in abandoning the actions condemned in the Vedas, in undertaking the upAsanAs prescribed in the Upanishads and in attaining the realisation of Brahman. (64)

यस्यैव दीप्तवपुषः परमात्मदृष्टे-
र्मुक्तात्मनो विगलिताखिलबन्धनस्य ।
अग्रे स्थितो हि मनुते स्वमतीवधन्यं
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ ६५ ॥

तप के कारण दीप्त वपुवाले, सर्वत्र परमात्म-दृष्टि रखनेवाले, सम्पूर्ण बन्धनों का विगलन होने से जीवन्मुक्तावस्था में विराजमान जिस यतिराज के सम्मुख स्थित व्यक्ति अपने को अत्यन्त धन्य मानते हैं, ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में अन्य साधनों का तिरस्कार कर मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ ६५॥

I take refuge in the preceptor Shri ChandrashekharendrasarasvatI, who possesses a glowing physical structure, whose vision is fixed in ParamAtman, who is liberated, whose bondages of various kinds have been destroyed and standing in whose presence one feels himself as being blessed plentifully. (65)

यस्यैव पूर्ण-परिपूत-परात्मबोध-
दीप्तस्य चेह सहजन्म-सहाधिवासैः ।

धन्या चकास्ति जनता भुवि भारतीया
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ ६६ ॥

जो पूर्ण पवित्र परतत्त्व के साक्षात्कार से प्रदीप्त हैं, जिसके कारण उनके साथ भारतभूमि में जन्म लेनेवाला तथा साथ-साथ निवास करनेवाला जनसमूह अपने को धन्य मानता है तथा जो भासमान अपने स्वरूप में विराजमान हैं, ऐसे श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में अन्य साधनों का तिरस्कार कर मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ ६६॥

I take refuge in the preceptor Shri Chandrashekharendrasarasvati, whose realisation of the complete and auspicious ParamAtman has rendered him radiant, by whose contemporaneity in birth and life the humanity in India is blessed. (66)

"योऽन्तः प्रविश्य मम वाचमिमां प्रसुप्तां
सञ्जीवयत्यखिलशक्तिधरः स्वधाम्ना" ।
हृद्ये सुपद्यरचने परिचोदयंस्तं
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं शरणं प्रपद्ये ॥ ६७ ॥

जो सम्पूर्ण शक्तिसम्पन्न परमात्मा शरीर के भीतर प्रवेश कर अपनी शक्ति के द्वारा मेरी गाढ़-निद्रा में निमग्न वाणी को सञ्जीवित करने के द्वारा सुन्दर पद्य-रचना में प्रवृत्त कर रहा है, उस परमात्मा के स्वरूप में विद्यमान श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती गुरुपाद की शरण में अन्य साधनों का तिरस्कार कर मैं प्रपत्तिपूर्वक गमन करता हूँ ॥ ६७॥

I take refuge in the preceptor Shri ChandrashekharendrasarasvatI, the all-powerful, who having entered me in spirit has kindled my dormant capacity for verbal expression and has caused by his might the composition of these good poems.

Note : The first half of this verse forms the words of Dhruva in the Srimadbhagavata. (67)

यद्दिव्यपादकमले नवपद्यपुष्पैः
सम्पूजिते शिवतमे शुभदे शरण्ये ।
श्रीचन्द्रशेखरयतीन्द्रसरस्वती वो
मह्यं सदैव वरदोऽस्तु गुरुर्गरिष्ठः ॥ ६८ ॥

नव पद्य-पुष्पों से सुपूजित जिनके दिव्य पादपद्मयुगल कल्याणस्वरूप, शुभ देनेवाले तथा शरणागत की रक्षा करनेवाले हैं, ऐसे पादपद्मवाले यतिवर श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती जी महाराज, जो अतिशय गरिमामय गुरु हैं, वह आप सबके लिए और मेरे लिए भी अभीष्ट की प्राप्ति करानेवाले हों । अर्थात् हम सबको आचार्यचरण से अभीष्ट की प्राप्ति हो ॥ ६८॥

May Shri Chandrashekharendrasarasvatl, the greatest of all the preceptors, whose lotus feet are auspicious, the giver of all good things and the sole refuge and which are worshipped with the flowers of these new verses, grant to you and me all that is
desired. (68)

इति श्रीवेम्पटिकुटुम्बशास्त्रीविरचिता एवं सार्था श्रीगुरुप्रपत्तिः समाप्ता ।
श्रीचन्द्राह्शेखरेन्द्रसरस्वतीस्वामी समर्पिता ।

Composed and translated in Hindi and English by
Professor Vempati Kutumba Shastri

Proofread by Vani V.

Shri Guru Prapattih
pdf was typeset on December 28, 2022

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*